उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद।
- इक़बाल

ऑल वर्ल्ड

बोहरा जर्नल

(मासिक)

रजि: RAJH/9396 | अंक : मार्च -2010 | वर्ष-14 | अंक-19 | मूल्य 3/- रु | वार्षिक 35/- रु.

बोहरा यूथ ने 1 मार्च को काला दिवस मनाया

दाऊदी बोहरा जमात बोहरा यूथ ने सन् 1973 में 1 मार्च के दिन बोहरा यूथ की महिलाओं के साथ अभद्र व अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में 1 मार्च, सोमवार को काला दिवस मनाते हुए समुदाय के लोगों ने हाथों पर काली पट्टी व व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर काले झण्डे लगाकर विरोध दर्शाया।

1 मार्च, सन् 1973 में गलियाकोट में बोहरा यूथ की महिलाओं के साथ अमानवीय व अभद्रता का व्यवहार किया गया, जिसका विरोध करते हुए बोहरा यूथ प्रतिवर्ष 1 मार्च को काला दिवस मनाता है। जमात ऑफिस में बोहरा यूथ एसोसिएशन द्वारा आयोजित बैठक में एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. जैनब बानो ने इस घटना की घोर निन्दा करते हुए इसे एक अमानवीय कृत्य करार दिया। इस अवसर पर एसोसिएशन के सचिव, इस्माईल अली दुर्गा, दाऊदी बोहरा जमात के अध्यक्ष, आबिद हुसैन अदीब, सचिव, युसुफ आर.जी. समेत अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे।

- अनीस मियांजी

बोहरा यूथ गर्ल्स विंग द्वारा महिला दिवस पर शिविर का आयोजन

उदयपुर 8 मार्च। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सोमवार 8 मार्च को बोहरा यूथ गर्ल्स विंग द्वारा यहां बोहरवाड़ी स्थित कम्युनिटी हॉल में ''स्वंय महिला द्वारा महिला सशक्तिकरण'' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. जैनब बानू ने कहा कि संविधान में अधिकार देने संसदीय कानून बनाने 5 वर्षीय योजनाओं एवं अन्य महिला उत्थान एवं कल्याण कार्यक्रमों को लागू कर भारतीय दण्ड संहिता के कानूनों को महिला हित में अधिक कठौर बनाकर प्रयास होते रहे हैं। लेकिन वस्तुस्थिति का विश्लेषण करें तो समाज में आज भी महिलाएं प्रताड़ित व हीन भावना से ग्रसित हैं। ऐसे में अपने अधिकारों के प्रति महिलाओं को स्वयं जागृत होकर संघर्ष करना होगा ताकि वो अपने वजुद की पहचान करा सके। स्वंय सशक्त होकर ही महिला सशक्तिकरण की राह में आगे बढ़ सकेंगे। विशिष्ठ अतिथि नगर परिषद् सभापति रजनी डांगी ने कहा कि एक ही दिन महिला दिवस क्यों बनाया जाए ?बल्कि महिलाओं को वास्तव में सशक्त बनाना हैं तो सभी को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। मुख्य अतिथि कला महाविद्यालय की अधिष्ठाता प्रो. अंजु कोहली ने कहा कि महिलाओं के सफलताओं से भयभीत पुरूष प्रदान समाज राजनीति में महिला आरक्षण का विरोध किया हैं। जो उनकी मानसिकता को प्रदर्शित करता हैं, लेकिन महिला अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहेगी तो निःसंदेह उसे अपने मकसद में कामयाबी मिलेगी। विशिष्ठ अतिथि महिला अध्ययन केन्द्र की निदेशक प्रो. विजयलक्ष्मी चौहान ने महिलाओं का आव्हान किया कि वे अपने भीतर की

शेष पृष्ठ 7 पर

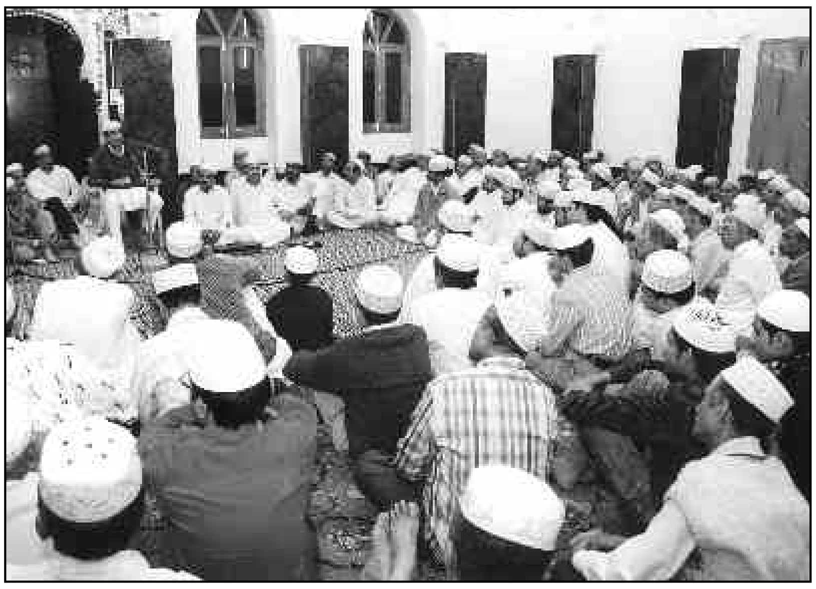

जश्न–ए–मिलादुन्नबी पर जमात द्वारा विविध आयोजन

पैगम्बर हज़रत मोहम्मद सा. के जश्न–ए–मिलादुन्नबी के मुबारक मौके पर 24 फरवरी की रात खानपुरा मस्जिद में दाऊदी बोहरा जमात (बोहरा यूथ) द्वारा मजलिस का आयोजन किया, जिसमें पैगम्बर हज़रत मोहम्मद साहब की जिन्दगी और उनके पैगाम पर तकरीर करते हुए डॉ. अब्बास अल्वी ने कहा कि आज जरूरत है कि हर इंसान पैगम्बर साहब के इंसानियत, भाईचारे और विश्व बंधुत्व की भावना को अपने भीतर आत्मसात कर मुल्क में अमन–चैन का पैगाम लाये। उन्होंने कुरआन की तिलावत व नमाज़ की अहमियत पर भी रोशनी डाली।

इस मौके पर बोहरा यूथ की खानपुरा, चमनपुरा, खांजीपीर, वजीहपुरा, खारोल कॉलोनी, बोहरवाड़ी इत्यादि मस्ज़िदों में रोशनी की गई।

शेष पृष्ठ 3 पर

बोहरा यूथ की सम्मानित शख्सियत

उदयपुर होज़री एवं रेडिमेड एसोसिएशन द्वारा तारीख 10.1.2010 को आयोजित ''सम्मान समारोह'' में विभिन्न समाजों के समाज सेवी व प्रतिष्ठित नागरिकों का सम्मान किया गया जिसमें बोहरा यूथ के 'जनाब सालेह मोहम्मद नायब' व जनाब 'कय्यूम हुसैन पालीवाला को एम.पी. रघुवीर मीणा, श्री गुलाबचन्द कटारिया, श्रीमती रजनी डांगी, श्रीमती सज्जन कटारा आदि की मौजूदगी में पगड़ी, शाल, माला व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह सम्मान दूसरे समाजों के बीच '' बोहरा यूथ'' के लिये फख्र की बात हैं।

इदारिया

''तारीखे– इन्सानियत का एक दाग़दार दिन''

एक मार्च का दिन दाऊदी बोहरों की तारीख़ में हमेशा मनहूस और काले दिन के नाम से याद किया जाता रहेगा। यह इस तारीख़ का वह दाग़दार दिन है, जब इन्सानियत काँप उठी थी, दीन–मज़हब का कलेजा छलनी हो गया था और शैतानियत सरे–आम मज़लूमों की बेबसी और लाचारी का मज़ाक़ उड़ा रही थी। यह मार्च 1973ई. का पहला दिन था, उसी दिन हिजरी तारीख़ के हिसाब से 27 मोहर्रम गलियाकोट में सैयदी फ़ख़रूद्दीन शहीद (आ.क़ु.) का उर्स था। लोगों का हुजूम था। दाऊदी बोहरों का हुक्मरां तब्क़ा भी पूरे ठाठ–बाट और लवाज़मा के साथ मौजूद था।

इतिहास बताता है कि ऐसे मौक़ों पर हुक्मरां तब्क़ा अपने शोक़ पूरे करने के साथ–साथ अपना फ़ायदा हासिल करने के लिए कुछ ऐसे करतब करवाता है, जिनसे उसकी जिन्सी और लागों को तकलीफ पहुंचाने वाली मानसिकता को तस्कीन हासिल होती है। पिछले जमाने में राजा–महाराजा लोग हाथियों को लड़वा कर और आदमियों को उनका सामना करवा कर, उन्हें कुचलते हुए देख कर लुत्फ़ अन्दोज़ होते थे, तो कभी किसी शामतज़दः आदमी को शेर से मुकाबला करवाने के लिये मैदान में उतार देते थे और उसे तफ़रीह समझते थे। ऐसे अनगिनत वाक़ेआत बेशुमार तरीक़ों से अंजाम पाते थे। जिनके बारे में न तो कोई पूछताछ की जाती थी और न ही कोई पाबन्दी लगाई जा सकती थी।

लेकिन इस ज़माने में भी ऐसी घटनायें ख़त्म नहीं हुई हैं। अलबत्ता वक़्त की तब्दीली के साथ उनके तरीक़ों में ज़रूर बदलाव आया है। आज भी इन घटनाओं के शिकार मज़लूम और बेबस ''लोग ही होते रहते हैं। गलियाकोट का वाक़िआ भी उनमें से एक है।

ऐसे शर्मनाक वाक़िआत कभी भी किसी अमानवीय कारण के बग़ैर नहीं होते। कोई अपने स्वार्थ की ख़ातिर बहकाता है और जाहिल लोगों का हुजूम बलवा करने के लिये चल पड़ता है। गलियाकोट में भी उर्स की रात को मज़हब के ठेकेदारों और दुनिया के सामने अमन का झूठा पैग़ाम देने वालों ने वहां मौजूद हज़ारों लोगों के दिलों में नफ़रत, गुस्सा और हसद (वैमनस्य) की चिंगारियां भर दी और फिर तमाशबीन की तरह तमाशा देखने में मगन हो गये और तमाशा ज़ाहिर है, शैतानों की अगुवाई में शैतानियत का खेल खुल कर खेलने में ही अंजाम पाना था, सो हुआ। मज़लूम औरतों पर वहशियाना हमले किये गये। उन्हें मीलों दौड़ कर अपनी इज़्ज़त बचाने के लिये मजबूर होना पड़ा। हक़ परस्त मर्दों को भाग–भाग कर जान बचानी पड़ी। बेबस औरतों की फरियाद ज़ालिमों के लिये तफरीह का सामान बन गई। वो हंसते रहे, तमाशा देखते रहे और बलवाइयों का हौसला बढ़ाते रहे। हद और हैरत तो यह थी कि बालकनी में खड़ी उनकी बेशर्म औरतें भी उनका साथ दे रही थी और औरतों के अपमानित होने पर हंस रही थीं। यह वह मंज़र था कि इन्सानियत लहू–लुहान हो गई थी। तारीख दाग़दार हो गई थी। ख़ुदग़र्ज़ी की ज़हरीली हवायें हसद की आंधियों को भड़का रही थी। धर्म का लबादः ओढ़े ऐश परस्त दरिन्दे कहक़हे लगा रहे थे और फ़ख़री मज़ार लरज़ रहा था।

यह तमाशा मज़लूम लोगों के साथ तो नीचे सहन और सड़कों पर हो रहा था, लेकिन ऊपर कोठार के दरबार में कुछ सीनियर लोगों पर भी हाथ साफ किये जा रहे थे, जिन्होंने म्युनिसिपल इलेक्शन में इस्लाह पसन्दों का साथ भूल से दे दिया था। उन्हें मजबूर करके यह कहलवाया गया कि ''हमसे ग़लती हो गई, अब हम अंधेरे से उजालों में आ गये।'' इनमें वे लोग भी थे, जो यह बेइज़्ज़ती सहन नहीं कर पाये तो अपने ऐनक के कांच तोड़ कर चबाने की कोशिश की और मार–पीट की और सज़ा पा गये।

लेकिन क़ुदरत भी कभी– कभी ऐसे भयानक नज़ारों के दरमियान जुर्म करने से पैदा हुई मुजरिमों के दिलों में ख़ौफ और दहशत के पहलुओं को बड़े दिलचस्प अन्दाज़ में उजागर कर देती है। तभी तो ये सूरमा लोग गलियाकोट में कमज़ोरों पर ज़ुल्म करके जब उदयपुर लौटे तो सीना तान कर नहीं बल्कि रात के वक़्त आये और वह भी बुर्क़े में।

तकलीफ की बात तो यह है कि गलियाकोट का हादसा जिसकी पूरे मुल्क ने मज़म्मत (निन्दा) की थी, धर्मगुरू की मौजूदगी में हुआ और उनकी जानिब से कभी भी इस पर अफसोस, दुःख या नदामत का इज़हार नहीं किया गया। बल्कि जाहिल लोगों को यह कहने की तरग़ीब दी गई कि धर्मगुरू के जुलूस के दौरान भीड़ में कुचल जाने से कुछ लोगों को तकलीफ हुई और यह कि यह तो रोज़मर्रा की एक साधारण घटना थी। उनके बड़े–बड़े झूठे कारनामों में एक बड़ा झूठ यह भी शामिल हो गया।

लेकिन इस हादसे से सूझ–बूझ रखने वाले लोगों ने यह अच्छी तरह समझ लिया कि मुजरिमों का ज़मीर (अन्तरात्मा) मुर्दा हो जाता है और झूठ बोलना ही इसकी रिवायत बन जाती है। इसके बजाय मज़लूमों में अख़लाक़ी ताक़त बढ़ जाती है और सच्चाई के लिये उनमें क़ुर्बानी का जज़्बा पैदा हो जाता है। ऐसे अवसरों पर एक तरह अदावत और दूसरी तरफ मुहब्बत जन्म लेती है। एक तरफ ख़ुदग़र्ज़ी और दूसरी तरफ इमदाद बाहमी (परस्पर सहयोग) का जज़्बा पैदा हो जाता है। एक तरफ दुश्मनी जैसी बीमारी से कमज़ोरी पैदा होती है, वहीं दूसरी तरफ सब्रो –इस्क़लाल की ताज़ा हवायें सेहतमन्द मआशरः (समाज) को जन्म देती है और एक नई पुकार के साथ मज़लूमों की आवाज़ बुलन्द होकर तहरीक बन जाती है। मज़लूमों की ऐसी इस्लाही तहरीकें ऐश परस्त तानाशाहों को इन्सानियत का पैग़ाम देने आती हैं। अगर वो समझ जाते हैं, तो अपने दीनो–दुनिया को संवारने का काम करते हैं। जिसके लिये इस्लाम उन्हें इन्साफ, भलाई और तमाम बन्दों की इज़्ज़त करने की हिदायत देता है और नाइन्साफी, बुराई और बेहुरमती से दूर रहने का हुक्म देता है। साथ ही बन्दों को भी यह समझ लेना चाहिये कि किसी भी हुक्मरां या धर्म गुरू के अमल (आचरण) से उसके धर्म को नहीं समझा जा सकता बल्कि धर्म की तराजू में उनके अमल को तोला जाना चाहिये।

आबिद अदीब

वनस्पति संरक्षण में कुरआन की भूमिका

– डॉ. सतीश कुमार शर्मा
क्षैत्रीय वन अधिकारी
वन विभाग, उदयपुर

धार्मिक ग्रन्थ कुरआन मजीद इन्सानी सौहार्द सुख व शान्ति का संदेश तो देता ही है, साथ ही धरती के अन्य निवासी वनस्पतियों व जीवों की सुरक्षा का भी संदेश देता है। हजरत मोहम्मद साहब ने फरमाया है ''आज से मक्के की धरती पर न तो किसी इन्सान का खून होगा और न ही किसी जानवर का शिकार किया जायेगा और किसी हरे–भरे दरख्त को भी नहीं काटा जाएगा।'' हजरत मोहम्मद साहब ने अपने इस फरमान में प्रकृति के प्राणियों व हरे–भरे वृक्षों की सुरक्षा को जरूरी बताया है। इसी तरह उन्होंने फरमाया है कि यदि जरूरत है तो केवल इजखिर ''घास'' काटी जा सकती है, कोई दूसरा हरा–भरा वृक्ष नहीं। यहाँ यह स्पष्ट है कि बिना जरूरत के उन्होंने वनस्पतियों को काटने यानि नष्ट करने की मनाही की है तो हरियाली को बरकरार रखने पर जोर दिया है।

हजरत मोहम्मद साहब ने एक जगह फरमाया है कि जो व्यक्ति सिदार वृक्ष (cedar) को काटेगा तो उसका सर जहन्नुम की आग में धकेल दिया जायेगा। यहाँ इस जन्म में वनस्पतियों के विरूद्धकिये पाप को मृत्यु बाद भी भोगने की चेतावनी दी गई है।

हजरत मोहम्मद साहब न केवल प्रकृति में उगे हुए वृक्षों की हिफाजत का निर्देश देते हैं बल्कि नये वृक्ष लगाने का भी निर्देश देते है। उन्होंने फरमाया है ''दरख्त लगाओ और जब इनसे मनुष्य फल खायेंगे या जानवर चारा चरेंगे तो इसका उतना ही सवाब मिलेगा जैसे फल या चारा खिलाकर मिलता है।'' हजरत मोहम्मद साहब की शिक्षाओं के अनुरूप हमें वृक्षारोपण के कार्य को निरन्तर करते रहना चाहिये ताकि उनसे मिलने वाले लाभ मनुष्यों व प्राणियों को सतत् मिलते रहें।

धरती पर उगने वाले तमाम पेड़–पौधे ''खालिके अरजो समा'' यानि अल्लाह के पैदा किये हुए हैं, जिसमें से कुछ का नाम कुरआन मजीद में आया है। अतः उनको दूसरे पौधों के मुकाबले एक विशिष्टता प्राप्त है। इन विशिष्ट पौधों का वर्णन स्वंय अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में किया है। इन धार्मिक महत्व के पौधों का मानव जीवन में तरह–तरह से उपयोग भी होता है। अतः इन पौधों को रोपित करना, इनकी देखभाल करना एक पवित्र कार्य की श्रेणी में आता है।

कुरआन में यूं तो अनेकों वनस्पतियों एवं उनके महत्व पर जानकारी उपलब्ध है परन्तु खजूर, जैतून, अनार, अंजीर, अंगूर, बेरी, मिसवाक, तुलसी, बबूल, मेंहदी आदि का बार–बार उल्लेख आया हैं। ये सभी बहुउपयोगी (plants of multiple uses) पौधे हैं, जिनसे मानव जाति को उपयोगी उत्पाद मिलते हैं। खजूर का कुरआन शरीफ में लगभग 30 बार, जैतून का 4 बार, अंगूर का 11 बार, अनार का 3 बार उल्लेख आया हैं। खजूर का बार–बार उल्लेख आना निःसंदेह इस वृक्ष की बहुउपयोगिता को रेखांकित करता है।

खजूर एक अशाखित बहुवर्षी वृक्ष हैं जो खाने योग्य फल देता है। इसकी पत्तियॉं व तना भी उपयोगी होते है। अरबी भाषा में इसे ''नख्ल'' व ''तमर'' कहते हैं। रेगिस्तानी क्षैत्रो में पानी की उपलब्धता वाले स्थानों पर ''नख्ल'' के झुरमुट ''नख्लिस्तान'' के रूप में मिलते हैं। खजूर के फल बहुत पौष्टिक होते हैं । अतः इन्हें सम्पूर्ण आहार का दर्जा प्राप्त है। खजूर के संबंध में एक जगह हजरत मोहम्मद साहब ने फरमाया है ''तुम खजूर नेहार मुँह खाया करो ऐसा करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।'' हजरत मोहम्मद साहब ने इस अनुपम फल के बारे में यह भी फरमाया है कि खजूर खाने से गठिया रोग नहीं होता। इस उपयोगी फल के बारे में हजरत मोहम्मद साहब ने यह भी फरमाया है ''खजूर में हर बीमारी से शिफा (छुटकारा) है, निहार मुँह खाने से यह जहरों को मारता हैं।''

अंजीर (fig) को अरबी भाषा में ''तीन'' कहा जाता है। अंजीर एक सुपाच्य स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यवर्धक मेवा है। हजरत मोहम्मद साहब के पास कहीं से अंजीर से भरा हुआ थाल आया। उसे देखकर आपने फरमाया कि अगर कोई कहे कि कोई फल जन्नत से जमीन पर आ सकता है तो मैं कहूंगा कि वह अंजीर हैं क्योंकि अंजीर विलाशुबह (निःसंदेह) जन्नत का मेवा है।

जैतून को अरबी भाषा में ''जैत'' या ''अल जैतून'' कहा जाता है। जैतून के तेल को खाने व मालिश के लिये पाक व मुबारक यानी सम्मान योग्य बताया गया है।

अंगूर एक लता है जिसे अरबी भाषा में ''एनब'' कहा जाता है। अंगूर में उपस्थित शर्करायें शरीर को शीघ्र ऊर्जा व स्फूर्ति देती है। इस पौधे की खेती आर्थिक दृष्टि से बहुत लाभदायक होती है। हजरत मोहम्मद साहब के जमाने में भी इस लता की खेती मक्का व मदीना में होती थी।

अनार एक झाड़ी के रूप में उगने वाला पौधा है जो स्वादिष्ट व पौषक फल प्रदान करता है। अरबी भाषा में इसे ''रूम्मान'' कहते है। इसके सुर्ख फूल भी बेहद आकर्षक होते हैं। इसकी खेती आर्थिक दृष्टि से फायदेमंद होती है। हजरत मोहम्मद साहब ने फरमाया है '' अनार खाओ .... यह मेदे को नया जीवन देता है। जिसने अनार खाया, अल्लाह उसके दिल को रोशन कर देगा।'' अनार दिल के मरीजों के लिये भी बहुत लाभदायक फल है।

मिसवाक को हमारे देश में पीलू कहा जाता है। यह एक सदाबहार वृक्ष हैं जो रेगिस्तान में भी हरा–भरा रहता है। हजरत मोहम्मद साहब ने मिसवाक के दस फायदे बताये हैं। मिसवाक की दातुन करने से दांत सुरक्षित रहते हैं। मुँह खुश्बूदार रहता है। मसूढ़े मजबूत रहते हैं। नजर तेज होती हैं। यह बलगम को निकालता है व सोजिश को दूर करता है। यह भूख भी बढ़ाता है। हजरत मोहम्मद साहब ने मिसवाक करने पर जोर दिया है और हो सकता था हर नमाज से

शेष पृष्ठ 4 पर

जश्न–ए–मिलादुन्नबी पर बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में नात व क्विज़ कॉम्पीटीशन

पैगम्बर हज़रत मोहम्मद सा. के जश्न–ए–मिलादुन्नबी के मुबारक मौके पर 25 फरवरी को बोहरावाड़ी व खांजीपीर स्थित बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल में नात, नबी की बातें व क्विज़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके विजेताओं को सुगरा बाई, दाऊद भाई, ट्रस्ट की ओर से पुरस्कार वितरित किये गये जबकि बोहरा यूथ मेडिकल रिलीफ सोसायटी की ओर से बच्चों में मिठाई वितरित की गई।

बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल (खांजीपीर) में आयोजित प्रतियोगिता में बाल वर्ग – फरजान अली–प्रथम, जूनियर वर्ग में यश ।ारा फातिमा–प्रथम एवं सीनियर वर्ग में नाज़िया शेख अव्वल रही। जबकि बोहरावाड़ी स्थित पब्लिक स्कूल में बाल वर्ग में अमास रजा–प्रथम, जूनियर वर्ग में आदित्य आमेटा–प्रथम, सीनियर वर्ग में पुरकेफ वहाब अव्वल रहे, जिन्हें मुख्य अतिथि दाऊदी बोहरा जमात के अध्यक्ष, आबिद अदीब ने पुरस्कार प्रदान किये।

इस मौके पर अदीब साहब ने बताया कि आज के वर्तमान दौर में जो हिंसा का खेल खेला जा रहा हैं वह इस्लामिक इरगीज़ नहीं है, क्योंकि इस्लाम तो अमन, चैन और भाईचारे का पैगाम देता है, जो पैगम्बर हज़रत मोहम्मद साहब की नसीहत रही है।

गुरूवार शाम को जमात खाना में सामूहिक नियाज़ का आयोजन हुआ, जिसमें समाज के लोगों ने हिस्सा लिया।

26 फरवरी को ईद मिलादुन्नबी के मौके पर महाराणा भूपाल सार्वजनिक चिकित्सालय में दाऊदी बोहरा जमात द्वारा फल वितरण किया गया,।

27 फरवरी को बोहरा यूथ मेडिकल रिलीफ सोसायटी द्वारा हाथीपोल के बाहर जुलुस–ए–मोहम्मदी का भव्य स्वागत किया गया तथा इस अवसर पर शरबत व तबरूख का वितरण किया गया। जुलुस–ए–मोहम्मदी के स्वागत में बोहरा यूथ एसोसिएशन, दाउदी बोहरा जमात, बोहरा यूथ स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसायटी आदि संगठनों के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

- अनीस मियांजी

बोहरा यूथ द्वारा नि:शुल्क डायबिटीज़ शिविर आयोजित

बोहरा यूथ मेडिकल रिलिफ सोसायटी द्वारा यहाँ बोहरवाड़ी स्थित बोहरा यूथ मेडिकेयर सेन्टर पर प्रातः 9.00 बजे से शाम 4.00 बजे तक निःशुल्क डायबिटिज जॉच शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 200 से अधिक लोगों ने अपनी जॉच करवाई और चिकित्सक से परामर्श लिया।

यह जानकारी देते हुए बोहरा यूथ मेडिकल रिलिफ सोसायटी के अध्यक्ष, अनीस मियांजी ने बताया कि डायबिटिज शिविर में डॉ. अशोक व डॉ. उस्मान शेख, डॉ. रेहाना बानो, सोसायटी के चिकित्सा प्रभारी, डॉ. इशाक शाह व उनकी चिकित्सकीय टीम ने अपनी निःशुल्क सेवाएं प्रदान की। इस मौके पर सोसायटी के कन्वीनर जनाब फखरूद्दीन रंगवाला भी उपस्थित थे।

Best Compliments From :

खॉंजीपीर मेमोरियल ट्रस्ट
उदयपुर

अपने इदारों की मज़बूती और ज़रूरत मन्दों की मदद के लिये ट्रस्ट फण्ड में चंदा देकर सवाब हासिल करें।

सम्पर्क : आबिद हुसैन अदीब (मेनेजिंग ट्रस्टी)

बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी
उदयपुर (राज.)
Phone No. 0294-2424886

DR. ISHAQ HUSSAIN SHAH (M.B.B.S., M.S.)
वरिष्ठ सर्जन (जनरल सर्जरी इन्चार्ज)
रोज़ सुबह 9.00 से 12.30 बजे एवं शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. REHANA BANU (M.B.B.S., M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)
रोज़ सुबह 8.30 से 12.00 बजे तक

DR. KULSUM SHAH (M.B.B.S., M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ (GYNAE & OBST.)
रोज़ शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

PHYSIOTHERAPY CLINIC
रोज सुबह 8.30 से 1.00 बजे तक
शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DENTAL CLINIC
(Branch of Darshan Dental College)
रोज सुबह 8.30 से 1.00 बजे तक
शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

CHILD SPECIALISTS
रोज सुबह 8.30 से 1.00 बजे तक
शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

हमारे यहां सोनोग्राफी, खून, पेशाब और सभी तरह की जांचे न्यूनतम लागत मे की जाती है।
प्राथमिक उपचार हेतु दवाईयाँ मुफ्त प्रदान की जाती है।
खतना की सुविधा उपलब्ध है।

Letter to the Editor :

आप अपने तअ्स्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001, E-mail : journal@dawoodi-bohras.com

वनस्पति संरक्षण में कुरआन की भूमिका

Continued from Page 2

पहले इसको फर्ज कर दिया जाता था। पीलू को कुरआन शरीफ में सूरह ''सबा'' में खम्त का नाम दिया गया है।

मेंहदी भी एक झाड़ी के रूप में उगने वाला पौधा है। फूलों से ''इतरे हिना'' निकाला जाता है। आपने फरमाया कि ''अल्लाह के नजदीक दरख्तों में निहायत प्यारा पौधा हिना, मेंहन्दी का हैं।'' जब कभी हजरत मोहम्मद साहब को जख्म होता या कांटा चुभ जाता तो आप हिना का लेप लगाया करते थे।

बबूल की एक किस्म जो अरब में पाई जाती है उसे ''तलहा'' कहते हैं और इसी नाम से कुरआन शरीफ की सूरह ''वाक्या'' में बबूल का उल्लेख किया गया है। तलहा का कुछ लोग केले का पौधा भी कहते हैं। इस वृक्ष का गौंद बहुत उपयोगी होता है। लकड़ी व फली भी उपयोगी होती है।

तुलसी एक छोटी झाड़ी के रूप में उगने वाला पौधा हैं। कुरआन शरीफ में ''रेहान'' के नाम से इसका दो बार उल्लेख हुआ है। यह हिन्दु धर्म में भी पूज्य हैं तथा घर–घर में आदरपूर्वक रोपित की जाती है। तुलसी एक महत्वपूर्ण पौधा है जो अनेकानेक रोगों के उपचार में उपयोगी है।

कुरआन शरीफ में वर्णित अनेकों पौधों में से ये तो कुछ उदाहरण ही हैं। इन पौधों को घरों, खेतों या जहॉ भी खाली जगह उपलब्ध हो लगाया व पनपाया जा सकता है। यदि कही थोड़ी जगह उपलब्ध हो तो कुरआन शरीफ में वर्णित सभी धार्मिक वृक्षों को एक साथ उगा कर ''कुरआनी वनस्पति उधान'' के रूप में तैयार किया जा सकता है। ताकि आमजन एक साल इन वनस्पतियों को देख सके तथा प्रेरणा पाकर उनका संरक्षण करने हेतु कार्य करें। कुरआन शरीफ के उपदेश वनस्पति संरक्षण हेतु स्पष्ट है। उन उपदेशों का पालन कर समाजोपयोगी वनस्पति का संरक्षण–संर्वधन किया जाना चाहिये।

आईये। कुरआन शरीफ की शिक्षाओं का पालन कर धरती पर विधमान हरियाली की सुरक्षा करें तथा जहॉ हरियाली किसी कारण से घट गई हैं, वहॉ पुनः हरियाली लाने हेतु मिल–जुल कर कार्य करें।

How To Get a Great Idea

No army can withstand the strength of an idea whose time has come

- Victor Hugo

An idea is the ability to tap our capacity by encouraging creative impulses and then acting upon them. Most of us seldom achieve our creative potential. We can try to unlock this reservoir of ideas hidden within each one of us. Here are tips on the best ways to do it: -

Capture a fleeting thought

A good idea is like a rabbit. It runs by so fast that sometimes we get to see only its ears or tails. To capture it we must be ready. Creative people are always poised, in that may be the difference between us and them. When a good idea comes your way, jot it down — on your arm if necessary. Not every idea will have value, of course .The point is to capture first and evaluate later.

Seek challenges

When you are stuck behind a locked door, every behaviour that's ever got you free turns up quickly… you may push or pull on the knob, bang the door – even shout for help. Put new and crazy items on your desk, keep clay in your top draw and mould it when you are working on a difficult problem. The more diverse the stimulation we receive, the more rapidly the mind spins out new ideas.

Expand your world

To enhance your creativity, learn something new. If you are a banker, take up tap dancing. If you are nurse, try a course in mythology. Read a book on the subject you know little about. Change your daily newspaper. The new will interconnect with the old in novel and potentially fascinating ways.

Becoming more creative is really just a matter of paying attention to that endless flow of ideas you generate and learning to capture and act upon the new that's within you.

- Rukhsana Saifee
Lecturer, Chartered Institute of Technology, Abu Road
email: ruksiajju@yahoo.com

गुनाहों का कफ्फारा (बीमारी)

रिवायत है कि रसूले खुदा (स.अ.) ने एक मर्तबा बीमारी का ज़िक्र किया। चुनॉंचि आप ने इरशाद फरमाया कि मूमिन जब किसी बीमारी में मुबतिला होता है और फिर अल्लाह ताअ़ला उसे इस बीमारी से निजात देता है, तो वह बीमारी उसके पिछले गुनाहों का कफ्फारा होती है। यानि बीमारी उसे इशारा कर देती है कि तुम तौबा कर लो और फिर गुनाहों से बचो। जब मुनाफिक़ बीमार होता है और फिर उसे बीमारी से निजात दी जाती है, तो उसकी मिसाल उस ऊँट के जैसी होती है जिसे उसके मालिक ने बांधा और फिर छोड़ दिया और ऊँट ने न जाना कि मालिक ने मुझे क्यों बांधा और फिर क्यों छोड़ दिया। ये सुन कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (स.अ.) बीमारी क्या चीज़ है मैं तो आज तक कभी बीमार न पड़ा। आपने (स.अ.) फरमाया कि उठ, मेरे पास से हट जाओ, तुम हम मैं से नहीं हो।

दुनिया में अल्लाह ने जिस तरह सुबह–ओ–शाम, दिन और रात बनाए हैं, उसी तरह अल्लाह ने सेहत और बीमारी, राहत और सुकून को बनाया हैं, बीमारी और दुःख हमेशा अल्लाह ताअ़ला के क़ेहरों अ़ज़ाब ही के तौर पर नहीं आती, बल्कि अल्लाह ताअ़ला अपने बन्दों पर करम का साया करता है, बीच–बीच में चौंका देता है कि फिर भी तुम नहीं चेते।

दुआ़ कि अब से भी भलाई के रास्ते पर लग जाओ दुरूस्त है कि अल्लाह की रेहमत उसके ग़ज़ब से आगे–आगे चलती है और वक्ते आख़िर भी अगर तौबा करती तो गुनाह माफ हो जाते हैं। खुमूस–ओ–ज़कात और फितरा यतीमों और बैवाओं की ख़ैर को अल्लाह याद दिलाता हैं कि अब से भी अपना पहला रास्ता बदल दो। अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ चलो। गुनाह उस वक्त तक माफ न होंगे जब तक मुस्तहिक़ लोग उसे माफ न कर दें।

लोगों का ख़्याल है कि बीमारी गुनाहों का कफ्फारा है, जिससे न सिर्फ यह कि उसके गुनाह साफ होते है। बीमारी की सख़्ती इन्सान को सोच फिक्र में डाल देता है कि हमने जो किया था पा रहा हूँ। उसी वक्त से अल्लाह को इन्सान याद करता हैं फिर भलाई की तरफ बढ़ता हैं। एक एक फर्द से अपने किये हुए शर की माफी मांगता हैं इसी से मालूम हुआ कि तकलीफ के वक्त अपने किये हुए वक्त को याद करता हैं और अगर कोई बन्दा मुसीबत–ओ–तकलीफ पर सब्र करें और राज़ी बरज़ा रहते, तौबा करें, आईन्दा से एहतियात बरते और नैकी–ओ–भलाई का दामन फैलाए तो अ़ज़ाबे खुदावन्दी नहीं बल्कि रहमते खुदावन्दी होगी।

अब यह ख़्याल पैदा होता है कि हमें गुनाहों की वजह से बीमारी में मुबतिला हुआ था। इसलिये वह न सिर्फ यह कि अपने पहले गुनाहों से बचता है, इसके बरख़िलाफ मुनाफिक़ का यह हाल होता है कि जब बीमारी से सेहतयाब होता है तो उसकी मिसाल बिल्कुल उस ऊँट की सी, यह समझेगा कि उसका मालिक मुझे क्यों छोड़ा है।

चुनॉंचें मुनाफिक बीमारी से नसीहतों ईबरत नहीं पकड़ता हैं और न गुनाहों पर नादिम होकर तौबा करता हैं, हॉलाकि वह जानता है कि हमनें जो कुछ किया है दुनिया ही में भुगत लेना है।

बहुत से नमकहराम तो ऐसे होते हैं कि अपने मफाद के ख़ातिर गाली गलोच करते हैं और शरीफ लोग ग़ल्ला और रूपया पैसा देकर ख़ामोश कर देते है, मगर कब तक, ज़िन्दगी में तो कुछ किया नहीं जब ख़त्म हुआ तो फिर वही खय्या ( ) इख़्तियार किया। लैकिन वह लोग सब्र करते हैं जो कि खुदादाद नसीहत हैं। इसका फल ये होता है कि नाजाईज़ किसी को तंग करना एक न एक दिन उसे पड़ जाता है। इसलिये कि उसकी बीमारी न तो उसके पहले गुनाहों का कफ्फारा होती है और ज़माने में उसके लिये बाईस नसीहत–ओ–इब़रत होती हैं कि वह गुनाहों से बच सके। रसूल (स.अ.) का यह ईरशाद कि तुम हम में से नहीं हो। मतलब यह है कि तुम हमारे तरीक़े से नहीं हो। क्योंकि जिस तरह हम बीमारी और बलाओं में मुबतिला होते हैं, उस तरह मुबतिला नहीं होते। हमें चाहिये कि जब बीमारी में मुबतिला हो तो अल्ला तबारक ताअ़ला से अपनी बीमारियों का शिकोह शिकायत न करें, बल्कि सब्र करें। यह ख़याल करते हुए कि इससे हमारे गुनाह माफ और हमारी ख़ताएं माफ हो रही हैं। पाँचो वक्त नमाज़ पढ़ें और अगले कामों के लिये तौबा करें, हमें नैक बनने का अल्लाह ताअ़ला की जानिब से एक मौक़ा और फ़राहम किया जा रहा है। इस मौक़े से फाईदा उठाएं और आने वाली ज़िन्दगी में गुनाहों से बचें और अच्छे आ़माल (काम) अन्जाम देने की कोशिश करें।

अल्लाह तआ़ला हम सबको अपने फज़लों करम से सेहतो आ़फियत अता फरमाए और बीमारी और परेशानी की सूरत में सब्र की और अपने गुनाहों की माफी माँगे। अल्लाह बड़ा ही रेहमत वाला है तौबा कर लेने पर वह सब कुछ माफ कर देगा। अब व़ादा करो कि अपने पड़ोस को नहीं बताएंगे।

अल्हाज एस.एस. अब्बास (रिज़्वी)
– फखरूद्दीन आर.वी.

THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans
We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch Ph: 0294 2422461 M: 9928790762	Dhan Mandi Branch Ph: 0294 2422355 M: 9828162044	Bada Bazar Branch Ph: 0294 2420429 M: 9414738065

Fatehpura Branch Ph: 0294 2450762 M: 9828195535	Madhuvan Branch Ph: 02942423542 M: 9460402651	Hiran Magri Branch Ph: 0294 2460893 M: 9414786877	Krsihi Mandi Branch M: 946030453

Rajsamand Branch Ph: 95 2952 224022 M: 9001055034	Salumber Branch Ph: 95 2906 231250 M: 979903464	Fateh Nagar Branch Ph: 95 2955 220316 M: 9001055034

पिछले अंक का शेष भाग

बिस्समिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

जनाब उम्मुलबनीन (अ. स.)

अब्बास (अ.स.) नाम जोकि जंगल का राजा केसरी से ताल्लुक़ है, वैसे ही। दिलावरी में मशहूर है। शायर ने कहा है कि – किस शेर की आमद है कि रन काँप रहा है। रन एक तरफ चर्ख़े कोहन काँप रहा है।

सिफ़ीन में अपने वालिद साहब के साथ और कर्बला में अपने भाई हुसैन (अ.स.) के साथ अब्बास (अ.स.) की आमद से ज़मीन काँप गई थी।

उबूल क़ुरबा (मशकी वाला) अब्बास (अ.स.) से एक रोज़ कूफ़े की मस्जिद में अब्बास (अ.स.) से अमीरिल मूमीनिन अ़ली–ए–आ़ला ने पानी मंगवाया। अब्बास (अ.स.) फोरन गये और एक प्याले में पानी भर कर लाए। अ़ली –ए–आ़ला तक अब्बास (अ.स.) पानी लाते वक्त अचानक आपके हाथ से गिर गया और पानी ढुल गया। यह देख कर हैदरे कररार एक दम बैचेन हो गये। असहाब यह देख कर कहने लगे कि मौला एक प्याला पानी ढुलने से आप इतना आज़ुर्दा क्यों हो गये। अब्बास (अ.स.) को हमेशा पानी लाने की ख्वाहिश रहती है। अभी जा के दुसरे पानी ले के आ जायेगें। अ़ली (अ.स.) ने फरमाया कि ए मेरे फिदाइयों आज मुझे वह बात याद आ गई कि यह मेरे लाडले अब्बास भूखे प्यासे पानी को तरसते मेरे एहलेबैत के लिये पानी लेने जाएगा और नहरे फ़ुरात से पानी भर कर बिना पिये वापस ख़ेमे की तरफ आयेगा तो रास्ते में दुश्मनों आपके दोनों बाज़ू काट डालेंगे और एक तीर मश्क को छेद कर अब्बास (अ.स.) के सीने में आ कर लगेगा और हुसैन पर शहीद होगा। अमीरिल मूमिनीन (अ.स.) की यह पैशिनगोई सुन कर कूफ़ा की मस्जिद में मातम का कोहराम मच गया और सब या हुसैन या हुसैन (अ.स.) कह कर ग़म मनाया।

अब्बास अलमदार (अ.स.) की तामीम–ओ–तरबियत अ़ली (अ.स.) खुद नफ्स बनफास (   ) आपके ज़ैरे आ़तिफत की। माँ साहिबा उम्मूलबनीन (अ.स.) ने भी अब्बास (अ.स.) को ताअ़त (   ) के इस्मे आ़ज़म की तलक़ीन की। एक मर्तबा माँ अब्बास (अ.स.) को कसौटी पर खरा उतरने को कहा कि हसन और हुसैन (अ.स.) को ताज़ीम –ओ–तकरीम किस वास्ते करते हो, जबकि तुम्हारे और हसन और हुसैन (अ.स.) के वालिद साहब एक ही है। अब्बास (अ.स.) ने फरमाया कि माँ जी साहिबा आप क्या फरमा रहे है। हसन और हुसैन (अ.स.) की वालिदा माजिदा फातिमा ख़ेरून्निसा (अ.स.) है और ख़ैरूल्बशर की शेहज़ादी है। कहाँ उनका मक़ाम और कहाँ आपका मक़ाम। रसूले ख़ुदा (स.अ.) फरमाते है कि हसन और हुसैन (अ.स.) दोनों हक़ के ईमाम हैं। चाहे उठे चाहे बैठे मैं इन दोनों ईमाम की ख़ाक हूं। अब्बास (अ.स.) का यह जवाब सुनके माँ बहुत खुश हुई और फरमाया ''अदना थई रह जु गुलाम– शुक्र ना कहजु कलाम, सजदा दई कर जु सलाम की शान वाला बनना । मौलाना अ़ली (अ.स.) ने अब्बास (अ.स.) को ईल्म ज़ाहिर और बातिनी बख़्श के मुमताज़ किया। ईमाम हसन और ईमाम हुसैन (अ.स.) से भी अब्बास (अ.स.) ने फायदा हासिल किया। अख़लाक़ ओ आदाब में शुजाअ़त और वफा में, इल्म और अ़मल में परहेज़गारी और पारसाई में, दिलेरी और दिलबरी में ताअ़त और ईबादत में हसन और हुसैन (अ.स.) के बाद अब्बास (अ.स.) का मुक़ाम आ़ला तरीन था। जब आपकी विलादत हुई तो ईमाम हुसैन (अ.स.) ने फरमाया कि यह हमारा बहादुर भाई और शेरे ख़ुदा के ख़ुज़ादे हैं और हमारी जान से ज़्यादा प्यारा है। हुसैन फरमाते है कि अब्बास (अ.स.) बनूहाशिम के सितारे हैं। इतना फरमा कर अब्बास को अपने गोद में उठा लिया तो अब्बास (अ.स.) उछल कर आपके कदमों पर गिर पड़े। यह देख कर आपकी माँ बहुत खुश हुई और अ़र्ज़ करने लगी कि ए फातिमा (अ.स.)के लाल ख़ुदा तआ़ला इसी तरह मेरे लाल को आपके कदमों में सलामत रखे।

एक मौक़े पर उम्मूल बनीन (अ.स.) अपने बेटे को ले कर हज़रत रसूले ख़ुदा (स.अ.) के मज़ार पर ले गई और मज़ारे अक़दस के एक हिस्से पर सुला दिया और दुआ़ की कि ए रसूले ख़ुदा (स.अ.) इस अपने दिलबन्द हुसैन के हबीब आपकी क़दमबौसी के लिए आया है । आप इसके सलाम को क़बूल फरमावें। इस तरह फरका कर रसूले ख़ुदा के मज़ार से ख़ाके पाक को लेकर अब्बास (अ.स.) के मुँह पर लगा दिया यकायक अब्बास (अ.स.) का चेहरा मुबारक पूनम के चाँद की तरह चमकने लगा और क़ब्रे मुबारक से आवाज़ आई कि ऐ हुसैन के सच्चे आ़शिक़ तुम्हारा मकाम दुनिया और आख़िरत में बहुत बुलन्द है। तुम हुसैन के शेदा हो तो हम भी तुम्हारे शेदा है। उसके बाद उम्मूल बनीन (अ.स.) शुक्र का सज्दा किया और अब्बास को लेकर फातिमा (अ.स.) के मज़ारे अकदस पे ले गई और सिर के पास सुला कर मज़ार पर सिर झुका कर दुआ़ की और फरमाया ऐ मेरे सर के ताज की दुल्हन और रसूले पाक की नूरे नज़र ये लोण्डी आपके शाहज़ादे हुसैन (अ.स.) की ख़ाके पा को लेकर शफाअ़त के लिये आई है । इस रहमत की नज़र फरमावें। कब्र से निदा आई कि ऐ मेरे बेटे अब्बास (अ.स.) तुम पर फातिमा (अ.स.) की जान क़ुरबान नबी–ए–करीम की रूह को शाहिद रख कर मैं यह कहती हूं कि ख़ुदा मुझे हसन और हुसैन (अ.स.) जैसे दो गुलबदन दिये हैं। इस्लाम और ईमान के यह दो रखवाले हैं। तीसरा मोहसिन था पर उसके बदले में यह अब्बास (अ.स.) मिला। इस तरह की खुशख़बरी लेकर खुश खुश बैतुशरफ में आई। उस वक्त ईमाम हुसैन (अ.स.) की उम्र शरीफ करीब 16–18 बरस की थी। और घर में तशरीफ रखते थे। अब्बास (अ.स.) आपको देख कर बैचेन हो गये। बैचेनी ज़ाहिर होने लगी। ईमाम आ़ली मकाम आपको अपनी गौद में लिया और फरमाने लगे कि आओ मेरे नानाजी साहब की उम्मत के पालनहार और मेरी माँ के शिया के रखवाले आओ। ये हुसैन (अ.स.) तुम्हारा दिली चाहने वाला है । खुश हो और मेरे को भी खुश करो, जिस वक्त अ़ली मुश्किलकुशा की शहादत हुई उस वक्त अब्बास (अ.स.) 16 या 17 बरस के थे। इतनी उम्र में अरब के लड़के बड़े बहादुर हो जाते हैं। ताअ़लीम –ओ–तरबियत ले के (यानी जंग के हुनर सीख के) मैदाने जंग में कूद पड़ते हैं। ईमाम हसन (अ.स.) की 10 बरस की ईमामत में कारकरदगी में अब्बास (अ.स.) आपके मददगार थे। दानिशमन्दी, दूरअन्देशी में यगानाए रोज़गार थे। हुसैन, ज़ैनब और कुलसूम (अ.स.) के रज़ाकार थे। बल्कि एहले बेत रसूल (स.अ.) के तरफदार थे। बनू हाशिम के कबीले के लोग जो कोई ईमाम हसन (अ.स.) को अ़र्ज़ करनी होती थी तो अब्बास (अ.स.) के ज़रिये अ़र्ज़ करते थे।

अब्बास (अ.स.) चेहरा मुबारक अ़ली (अ.स.) जैसा लगता था। गोल चेहरा, काली आँखे, रोऔबदार दाढ़ी, बलवान बाज़ू, छाती पोली, पेट पतला, पॉऊ भरावदार और लम्बे इतने कि घोड़े पर सवार होते तो पॉऊ ज़मीन को छूते थे। हथेलियाँ मुलायम ऐसी कि तलवार इसमें घूमती थी। पापियों के लिये सख़्त और ग़रीबों पर रहमदिल। ऐसी शान के आप मालिक थे। शेर दिल मगर दिल के दिलावर थे। किसी की मजाल नहीं कि अब्बास (अ.स.) के सामने किसी की चुग़ली कर सके और न झूठी कसम खा सके। आज भी आपके रोज़ा–ए–मुबारक पर कोई भी झूठे कसम नहीं खा सकते।

ईमाम हुसैन (अ.स.) हिजरी सन् 50 के सफर की 28 तारीख से हिजरी सन् 61 मोहर्रम की 10 तारीख तक आपका ईमामत का दौर 10 बरस 12 दिन का था। इन अ़र्से में हज़रत अब्बास (अ.स.) आपके बाज़ुदार और मददगार थे। शाम के लोगों की तरफ से मदीने में कि जिसका गवर्नर वलीद बिन उताबा था, उसको अब्बास (अ.स.) बार–बार चेतावनी देते थे कि तू मेरे ओहदे से अलग हो जा, वरना जहन्नुम का गड्डा तेरे लिये गेहरे से गहरा हो रहा है। वलीद अब्बास (अ.स.) की बहादुरी से बेख़बर नहीं था और हर बार इन बातों को हंसी में टाल कर अब्बास को वदाअ़ कर देता था। मरवान (ल.) बिन हकम को यह बात एक ऑख नहीं भाती थी। वलीद थे ईमाम हुसैन को अ़हेद (मीसाल) बाबत छूट दे रखी थी। इसलिए ये बात उनको खटक रही थी।

इसके आगे बहुत हालात हुए और कर्बला का वाक़िया हुआ सबको मालूम है इसलिये मैं यहाँ ख़त्म करने की इजाज़त चाहता हूं।

– फखरूद्दीन आर.वी.

अल्लाहो शाफी

घुटने में दर्द

(अल्हाज डाक्टर सय्यद रज़ा हुसैन नक़्वी *M.B.B.S.(PTA) D.M.&H (liver pool) D.P.M.(London)* बाला गंज लखनऊ

इन्सान के जिस्म में 187 जोड़ें हैं। मगर कोई जोड़ा इतनी तकलीफ नहीं देता हैं जितना कि टख़्ने का जोड़ा देता है। इसके दर्द की तकलीफ बहुत आ़म है। ख़ास कर इन्सान की जैसे जैसे उम्र बढ़ती जाती हैं वैसे ही वैसे इनकी तकलीफ बढ़ती जाती हैं, सवारी से यानि मोटर, कारें, बस वग़ैरा के हादसे में इस जोड़ पर ज़ख़्म होता हैं, सीढ़ी पर चढ़ते वक्त, झुक कर काम करने पर, फिसल कर गिरने पर, आम तरीक़े से इसी जोड़ को तकलीफ पहुँचती है, इस तकलीफ से कैसे बचा जा सकता है।

1. जितना ही आपका वज़न ज़्यादा होगा उतना ही इस तकलीफ के होने का खतरा है। इसलिये अपने वज़न को बढ़ने न दें। अगर वज़न ज़्यादा हैं तो कम करने की कोशिश करें।

2. किसी दुकान से जहाँ खेल कूद का सामान मिलता है या किसी सर्जिकल स्टोर से नी केप (knee cap) अपने साईज़ का ख़रीद कर पहनें। अगर आपकी इसके पहनने से थोड़ी भी तकलीफ बढ़ जाय तो उसे न पहनें।

3. दर्द के लिये मालिश तैल लगाएं, इससे गर्मी पहुँचेगी और दर्द में कमी मालूम न होगी, मगर ये न समझें कि ये मर्ज़ का ईलाज है।

4. Paracetamol या ibuprofen की गोली इस्तेमाल करें, इस से सूजन और दर्द में कमी होगी। ibuprofen मूफीद है, मगर ज़्यादा इस्तेमाल न करें।

5. वह ऊज़ला (muscle) जो इस जोड़ को ताक़त देते हैं, इनकों मज़बूत करने की वर्ज़िश करें।

तकिया पीठ पर लगा कर, दीवार से लगा कर, बैठ जाएं, अपने झांग के muscle को कसें, तीन सैंकण्ड तक रोके रहें फिर ढ़ीला कर दें, इस तरह पच्चीस बार करें, इसके बाद पैर को चार ईन्च दबा कर ऊपर उठाएं और पाँच तक गिनें। फिर नीचे कर लें और पाँच तक गिनें, इस तरह दस बार करें। झांग के पीछे के ऊज़ला (hamstring muscle) को भी मज़बूत बनाना है। अपने पेट के बल लेट जाएं, दोनों पैर में कुछ वज़नी चीज़ बांधलें फिर पैर को धीरे–धीरे उठाएं ऐसा उस वक्त तक करें, जब तक थकान न मालूम हो।

एहतियात (precaution) ऊपर बताई हुई वर्ज़िश से तकलीफ बढ़ जाती है तो आप ये वर्ज़िश न करें।

अगर ज़्यादा काम या वर्ज़िश या चोट लगने की वजह से टख़्ने से दर्द हुआ है तो बर्फ की पोटली बना कर जोड़ पर रखें, जोड़ को उठा कर रखें और चलना कम कर दें, जोड़ को आराम दें, बर्फ की पोटली को क़रीब बीस मिनट तक रखें। अगर टख़्ने में दर्द हैं मगर सूजन नहीं है, तो गरम चीज़ से सेकें, मगर सूजन होतो गर्म चीज़ से न सेके।

7. अपनी उंगली से घुटने के चारों तरफ दबाएं, जहाँ दर्द हो इस पर निशान लगाएं, इसको trigger point कहते हैं। यहाँ से जोड़ दर्द से मिलता है। इसको अपनी ऊंगली से मालिश करें, अगर प्लास्टर का मेगनेट (magnet) मिल जाए तो इस पर लगा कर एक हफ्ते तक छोड़ दें।

दवा के बारे में डॉक्टर से सलाह लें।

अगर आपके घर में बिजली है तो आसमानी रंग (blue) जला कर इसकी रोशनी जिस टख़्ने पर दर्द है इस पर 15 से 20 मिनट तक डालें।

इसलाह माहनामा से माख़ूज

– फखरूद्दीन आर.वी.

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy Muslim Women's Newsletter.

101 lashes, fine for 'raped, divorced' Bangla teen

Alleged rapist, Enamul Mia, 20, was let off by the village arbitrators who awarded teenaged girl 101 lashes, the Daily Star newspaper said: Life couldn't be more unfair to a teenaged Bangladeshi girl, who was first raped, then divorced on being found that she had conceived before marriage, and finally administered 101 lashes for her "sins".

Eight months after being raped, village arbitrators found the 16-year-old at Khargor village of Kasba upazila (sub-division) in Brahmanbaria district, guilty and issued the fatwa for 101 lashes.

The arbitration also fined the victim's father $160 and issued another fatwa that her family would be ostracised if he failed to pay up. Village matbar (local leader) Delwar Hossain alias Ullashi executed the lashes on January 17. The report quoted the girl's family sources as saying Enamul Mia of Gabbari used to tease the girl on her way to school. He raped her in April 2009. Fearing shame, the girl did not disclose the incident. She was married off to a man of a neighbouring village but was divorced after a month as medical test revealed that she was seven months pregnant. She lived at her father's place after an abortion. A group of so-called matbars, led by Manik Mia, declared that her family is to be isolated until she was punished.

The influential group arranged the arbitration on January 17 that ruled against the girl.

At one stage of the torture, the girl collapsed and fainted. She regained consciousness after two hours. "Enamul has spoiled my life. I want justice," said the girl as she sobbed away silently.

Talking to the Daily Star, the neighbours spoke in favor of the girl and blamed Enamul but did not dare to say anything against the so-called village arbitration.

Kenyan peacemaker wins global prize

Dekha Ibrahim Abdi, a peace activist from north Eastern Province, is the winner of a global award, the 2009 Hesse Peace Prize which she received in Germany recently.

Her peace activism is long and chequered, having started the Wajir Peace Committee in the early 1990s to try and end persistent clan wars in the region.

At the time, her passion was to see peace prevail in a region where hostile clans were in a permanent war mode. It did not occur to her that the world was watching. And then recently, Ms Abdi scooped the global award that told her that her efforts were not in vain.

Wajir was under emergency law from 1963 to 1990, with government forces fighting an active guerrilla movement (the Shifta war). When the emergency and quasi-occupation ended, the security situation deteriorated even more.

In 1992, Ms Abdi and other women as well as concerned men started a grassroots peace initiative, bringing together people from all clans.

Despite opposition from the traditional clan leaders, they began to organise mediation between the warring parties (with representatives of minority groups acting as moderators). When an agreement was in place, they set up the Wajir Peace Committee, with representatives of all parties to implement the agreement.

Fostering inter-faith dialogue and attempting to resolve tensions and conflict between religions has been a central focus of Ms Abdi's activity since her first involvement in working for peace, and her methods have now been copied not only elsewhere in Kenya, but in Uganda, Ethiopia, Sudan, and South Africa.

Pakistan's female fighter pilots break down barriers

Six years ago an ad in the Sunday paper changed a young Pakistani woman's life and made aviation history.

The ad read: "Pakistan Air Force recruiting females cadets."

Back then Ambreen Gul was 20-years old and living in Karachi. Her mother wanted her to be a doctor. She remembers her reaction when she told her she wants to fly.

"She was like: 'You're a girl,'" says Gul. "How will you do it? How will you fly?"

The following day Gul took the first step in proving her mother wrong. She was among the first in line at the recruitment center.

For nearly six decades it was only men who had flown Pakistan's fighter jets. Today Gul is one of seven women who are trained and ready to fly Pakistan's F-7 supersonic fighter jets.

"This is a feeling that makes you proud and makes you humble also," says Gul.

Humility doesn't mean lack of confidence.

"We can do everything better than the men," explains cadet Nida Tariq.

"We're more hardworking, more consistent and more patient," adds cadet Anam Faiq.

To become a fighter pilot takes three years of training at the Air Force Academy in Risalpur, Pakistan, where the halls are lined with grainy black-and-white pictures of nearly six decades of male graduates who went on to fly for the Pakistan Air Force.

The training is often intensely physical. Here, equal opportunity means equal treatment.

If they are not good enough as per their male counterparts, we don't let them fly," says commanding officer Tanvir Piracha.

Some of Pakistan's female pilots wear hijabs. Others prefer to go without the Muslim headdress. Most say changing the misconception of Muslim women is just as important as serving their country.

"Islam gives equal opportunity to females. Whatever we want to do we can," says pilot Nadia Gul.

But women rarely fly in combat anywhere in the world and it's never been done in Pakistan. It's another barrier Gul plans to break.

'Partial' burka ban

France took the first step towards barring Muslim women from wearing the full veil when using public services, but stopped short of calling for an outright ban after critics argued that such a move would be socially divisive and hard to enforce.

A cross-party committee of MPs was set up last year to explore the controversial issue in France of burkas and niqabs. The committee recommended to Parliament that Muslim women should be allowed to carry on covering their faces in the street.

Its final report, however, recommended that anyone covering their face be barred from entering public sector property, including hospitals and schools, or using public transport.

Under the proposals, a woman who fails to remove her veil in such cases would not face a fine for breaking the law but would be refused access to the service. She would not, for instance, be allowed to collect her child benefit payments or take the bus.

Nicolas Sarkozy, who has repeatedly said that the full veil “is not welcome” on French soil, is believed to be in favor of this partial legislation rather than other, more radical suggestions from recalcitrant members of his own Right-wing UMP party.

Jamaat tells Muslim women to contest polls

Hundreds of purdah-clad women attended a meeting late into the night as the Jamaat-e-Islami held a convention exclusively for women in Kerala's Malappuram recently.

While the slogan was 'women power for social revolution', the Jamaat admitted its goal was to encourage them to take the plunge into the coming local body elections, where 50 per cent of the seats would be reserved for women.

Except Jamaat-e-Islami Kerala chief T Arif Ali, all the speakers on the dais were women. The spadework for the event was done almost exclusively by Jamaat women, who went around with campaign material, sometimes disregarding protests from orthodox segments.

"Muslim women should surge ahead in socio-political spheres after proving their ability. In the three-tier Panchayati Raj system, 50 per cent of the seats are reserved for women.

The next elections are a great opportunity as well as a heavy responsibility. “Prove your mettle," urged K K Fathima Suhara, the president of the women's wing of the Jamaat.

The Jamaat attempts, however, have evoked a sharp protest from the Sunnis, a powerful Muslim segment in the state. Its chief, Kanthapuram A P Aboobacker Musaliyar, said it was highly deplorable that women were being "paraded in public" in such a conference.

अंतधार्मिक संवादों को गहन व व्यापक बनाने की

– डॉ. असगर अली इंजीनियर

पिछले अंक का शेष भाग

निहित स्वार्थी तत्व धर्म का दुरूपयोग करते हैं ओर इससे समस्या और जटिल हो जाती है। धर्म के राजनैतिक संस्करण को मूल धर्म मानने की भूल हम सब करते हैं। इतिहास और वर्तमान दुनिया में इस तरह की भूलों के अनेक उदाहरण हैं। क्रूसेडस इस्लाम और ईसाईयत के बीच टकराहट नहीं थी बल्कि फिलिस्तीन पर काबिज होने की लड़ाई थी।

रामजन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद भी धार्मिक विवाद नहीं था। यह तो एक धर्म स्थान से जुड़े हुए विवाद का राजनीतिकरण था। इस विवाद को सुलझाने की सही जगह अदालत थी। इस विवाद को खड़ा भी संघ परिवार ने ही किया था। सन् 1948 में रात के अंधेरे में मस्जिद के भीतर राम और सीता की मूर्तियां स्थापित कर दी गई और सन् 1980 के दशक में गड़े मुर्दे उखाड़कर राजनैतिक लाभ उठाने की सफल कोशिश की गई।

जिस तरह की दुनिया में धर्म का राजनीतिकरण हो रहा है वैसा ही पहले भी होता रहा है। दुर्भाग्य से वह सब इतिहास बन गया है और अब हमारे लिए सच और झूठ, धर्म और राजनीति, को अलग–अलग करना मुश्किल हो गया है। हम उन पुरातन मुद्दों को लेकर अब आपस में लड़ रहे हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण है जेहाद की अवधारणा। कुछ अतिवादी मुस्लिम तत्व अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इस अवधारणा का घोर दुरूपयोग कर रहे हैं।

इन तत्वों के जेहाद और कुरआन के जेहाद में जमीन–आसमान का फर्क है। कुरआन के अनुसार अच्छाई को फैलाना और बुराई से मुकाबला करना जेहाद है। यह संघर्ष बौद्धिक है और इसमें हथियारों के लिए कोई जगह नहीं है, यद्यपि कुछ इस्लामिक विद्वान यह मानते हैं कि अगर बुराई हिंसक स्वरूप ले ले तो हथियारों का प्रयोग भी किया जा सकता हैं। पैगम्बर मोहम्मद साहब के अनुसार दबे– कुचलों को न्याय दिलवाना और निरंकुश राजा के मुंह पर सच बोलना जेहाद है।

इतिहास गवाह है कि कई मुस्लिम राजाओं ने अपने राज्यों का विस्तार करने क लिए जेहाद की अवधारणा का जमकर दुरुपयोग किया। हर गैर–मुस्लिम राजा से लड़ाई को वे जेहाद कहते थे। पैगम्बर साहब ने स्वंय अपने जीवन में कई लड़ाईयां लड़ी परन्तु इन लड़ाइयों को उन्होंने कभी जेहाद नहीं कहा। इन लड़ाइयों को गज्व कहा गया, जो इस्लाम के आगमन के पूर्व की अरबी भाषा में कबीलों के बीच की लड़ाईयों को कहा जाता था। इस्लाम के पूर्व के अरब में बड़े युद्ध नहीं होते थे और हिंसा मुख्यतः कबीलों के बीच होने वाली झड़पों तक सीमित रहती थी और इन झड़पों को गज्व कहा जाता था।

अगर हर लड़ाई को जेहाद कहना उचित होता तो क्या पैगम्बर साहब ने लड़ाइयों को, जिनमें वे स्वंय शामिल थे, जेहाद नहीं कहते ? आखिर जेहाद शब्द के इस्तेमाल का अधिकार उनसे अधिक किसे हो सकता था ?इसके बावजूद भी, खिलाफत (मोहम्मद साहब के चार खलीफाओं के राज के तीस साल) के बाद सत्ता पर काबिज होने वालों ने अपनी आपसी लड़ाईयों को जेहाद का दर्जा दिया। हर गैर मुस्लिम शासक के साथ मुस्लिम शासक की लड़ाइयों को जेहाद कहते रहने से इस शब्द का अर्थ ही बदल गया हैं।

आज जो अतिवादी अपने ही देश के मुस्लिम शासकों के खिलाफ लड़ रहे हैं और मुस्लिम व गैर–मुस्लिम निर्दोष नागरिकों को मार रहे हैं, वे भी अपनी अर्थहीन हिंसा को जेहाद का नाम देते हैं। मुसलमानों सहित वे लोग जिन्हें इस्लाम का गहराई से ज्ञान नहीं है, आतंकवादियों की हिंसा को जेहाद मान भी लेते हैं। 9/11 से लेकर आज तक, तथाकथित जेहादियों ने केवल निर्दोष लोगों को मारा है। चाहे अफगानिस्तान हो, पाकिस्तान या ईराक, मारे जाने वाले लगभग सभी मुसलमान हैं क्योंकि इन देशों में गैर मुसलमानों की आबादी बहुत कम है।

जेहाद शब्द का इतना दुरूपयोग कभी नहीं हुआ जितना कि अल्कायदा और तालिबान, अफगानिस्तान और पाकिस्तान में कर रहे हैं। इनकी खूनी कार्यवाहियों को जेहाद बताना जेहाद की अवधारणा का अपमान है। जेहाद दुनिया को बेहतर बनाने का बौद्धिक संघर्ष है न कि मासूमों का अकारण खून बहाने का बहाना।

धार्मिक अवधारणाओं के बारे में इसी तरह की भ्रांतियों के चलते मेरा यह मानना है कि हम सब के लिए एक दूसरे के धर्मों का गहराई से अध्ययन करना आवश्यक है। सतही संवादों, जिनमें हम अपनी धार्मिक परम्पराओं की तारीफ करते हैं और यह नहीं बताते कि उनमें कमी या गलती कहां है, से काम नहीं चलने वाला।

इस तरह के संवदों में भाग लेने वालों की संख्या सीमित नहीं होनी चाहिए। हमें मीडिया के जरिए अधिक से अधिक लोगों को इन संवादों से जोड़ना चाहिए। मीडिया अंतर्धार्मिक संवादों में कोई रूचि नहीं लेती। मीडिया के जरिए धार्मिक पूर्वाग्रहों को हवा दी जाती है। मीडिया अपने पाठकों या दर्शकों के सामने घटनाओं को सही परिपेक्ष्य में प्रस्तुत नहीं करती। मीडिया का न केवल व्यवसायीकरण हो चुका है बल्कि राजनीतिकरण भी हो गया है। मीडियाकर्मियों की भी अंतर्धार्मिक संवादों में भागीदारी होनी चाहिए।

Centre for Study of Society and
Secularism Mumbai
E-mail: csss@mtnl.net.in

BOHRA YOUTH
UDAIPUR (RAJ.)

बोहरा यूथ एसोसिएशन द्वारा आयोजित
13 वां सामूह निकाह

तारीख : 14 मई 2010
(1 जुम्मादिल आखिर 1431 हिज़री), शुक्रवार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-
सचिव, बोहरा यूथ एसोसिएशन
पता : दाऊदी बोहरा जमाअत (सबील ऑफिस)
73, डॉ जाकिर हुसैन मार्ग, बोहरावाड़ी, उदयपुर

नोट : मिलने का समय : सुबह - 10 बजे से 12 बजे

महिला दिवस .....

ऊर्जा पहचानकर हीन भावना से ऊपर उठे और स्वंय निर्णय लेने की हिम्मत जुटाये तो निःसंदेह उन्हें सफलता मिलेगी।

कार्यक्रम की अध्यक्ष, श्रीमती सुषमा कुमावत ने कहा कि महिलाओं को पुरूष पदप्रदर्शक बनाना होगा और नीति निर्माताओं को मांग पत्र के रूप में दिशा देनी होगी। परिचर्चा का संचालन सकीना दाऊद ने किया। इससे पूर्व कुलसुम बानू ने सभी का स्वागत किया। जबकि श्रीमती अमिना नाथ ने सभी का आभार जताया। इस अवसर पर पार्षद रेहाना बानू जर्मनवाला एवं नफीसा सैफ को सम्मानित किया गया।

कमला बाई

– सैफुद्दीन इन्साफ

दुबली पतली कमला बाई रहती तो मुम्बई के मोती टाकीज़ के पास गोल पेठा की एक पुरानी चाल में, लेकिन दिन में दो बार भटियार ख़ाने का सस्ता खाना लेने भिन्डी बाजार आती थी। इस महंगाई के ज़माने में भी भटियार ख़ाने में पाँच रूपये में तन्दूर की एक बड़ी रोटी और भाजी मिल जाती थी, जो एक वक्त पेट भरने के लिए काफी थी। कमला बाई यह खाना उस वक्त से ख़रीद रही थी जब यही तन्दूर की रोटी और भाजी सिर्फ चार आने में मिलती थी। वह भिन्डी बाज़ार के कई महलों से गुजर कर भटियार ख़ाने पहुंचती। पुरानी चाल की अंधेरी खोली में रहने वाली कमला बाई जब संगेमरमर के सफ़ेद मकबरे के इर्द गिर्द सफ़ेद उजले कुर्तों और टोपियों में मर्दों और रंगीन फूलदार बुर्क़ों में औरतों को देखती तो उसकी आँखों में उजाले भर जाते। खासतौर से मुहर्रम के दिनों में जब जे.जे. अस्पताल से लगाकर मोहम्मद अली रोड़ तक रास्ते में हर जगह जगमगाती सबीलें लगती ताज़ा गुलाबों से सजी हुई। वह ख़ूब मज़े ले लेकर इन सबीलों से दूध और शरबत पीती।

इस रोज़ भी जब वह भिन्डी बाज़ार से गुज़री तो बोहरी मुहल्लें से बाहर निकलती हुई धर्म सी लेन से लगे बस स्टॉप के पास एक औरत का ज़ारो कतार रोते हुए देख कर रूक गयी। इस औरत ने वही रंगीन फूलदार बुर्क़ा पहन रखा था जिसे देखकर उसे खुशी होती थी, हालांकि बार–बार धुलने की वजह से बुर्क़े के फूल फीके पड़ चुके थे। इस औरत के पेरों से लिपटी स्कूल युनिफार्म में एक छः सात साल की बच्ची खड़ी थी साथ ही सफ़ेद कुर्ते और टोपी में दाढी खुजाता हुवा इसका शोहर और ज़मीन पर रखी दो पतरे की पेटियों की निगरानी करता हुवा बीस बाईस साल का बेटा खड़ा था। इन सब के चेहरों से ख़ौफ और परेशानी साफ़ झलक रही थी। लगता था इन पर कोई बड़ी मुसीबत गुज़री है और इनकी समझ में नही आ रहा कि वह क्या करें ? भीड़ भाड़ वाला इलाक़ा लेकिन अजब लापरवाही का आलम था। लोग आ जा रहे थे, लेकिन किसी को उनकी तरफ देखने की फुर्सत नहीं मिल रही थी। बक़ोल इसन नईम ''सब अपनी अपनी कर्बला सीने में दबाएं चल रहे थे। शायद दर्द का कोई रिश्ता था कि कमला बाई की नज़र इन पर ठहर गई। वह बुर्क़े में सर से पाँव तक ढ़की इस औरत के पास गई और पूछा ''तुम लोग किसी तकलीफ़ में हो ?क्या बात है?'' हमदर्दी के यह अल्फ़ाज कान में पड़ते ही बुर्के वाली औरत की आँखों से आंसूओं का एक सैलाब फूट पड़ा। इसने कमला बाई से कहाँ ''मकान मालिक ने हमें घर से निकाल दिया है, अब हम कहाँ जाएं ?'' कमला बाई के अधिक पूछ ताछ पर इस औरत ने पहले तो अपने बेटे नजमी को खूब बुरा भला कहा कि यह सब इसी नालायक़ की वजह से देखना पड़ा हैं। फिर अपने बेटे नजमी के दोस्त आशिक़ हुसैन के बारे में बताया कि वह है तो हमारी ही बिरादरी का लेकिन शादी उसने सुन्नी मुस्लिम लड़की से की और निकाह भी सुन्नी मुस्लिम क़ाज़ी से पढ़वाया। कल अचानक उसकी तीन महीने की बच्ची का इन्तिक़ाल हो गया और वह उसे हमारी बिरादरी के कब्रिस्तान में दफन करने पर अड़ गया। सारे मुहल्लों में खूब हंगामा किया हमारे बेवकूफ नजमी भी उसके साथ हो लिया। इसके बाद भी जब दफन नहीं करने दिया तो आशिक हुसैन ने पेट्रोल का एक कनस्तर नजमी को पकड़ा दिया और वह बच्ची की लाश लेकर डूंगरी पुलिस चौकी पहुंच गए और पुलिस इन्सपेक्टर की टेबल पर लाश रखकर धमकी दी कि अगर इसे दफनाने में पुलिस ने मदद नहीं की तो वह लाश वहीं पुलिस चौकी में पेट्रोल डालकर जला देगा। अखबार वालों को भी बुला लिया था, जिन्होंने आशिक के साथ नजमी का फोटो भी छाप दिया। प्रेस के दबाव में पुलिस ने काफ़ी मारा मारी के बाद बच्ची की लाश को दफन तो करवा दिया लेकिन नजमी के खानदान का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। सामाजिक दबाव में डराकर मकान मालिक ने भी उन्हें घर से निकाल बाहर किया। माफी मांगने और मिन्नतें करने के बाद भी किसी को रहम नहीं आया। यह लोग भिन्डी बाज़ार के इस मकान में चालीस साल से रह रहे थे, लेकिन कभी इसकी ऐसी बेइज्ज़ती नहीं हुई थी, अब क्या करें ?और कहाँ जाए?न जेब में पैसे थे और न कोई और सहारा।

कमला बाई दलित थी जो बचपन से समाज के ऐसे ज़ुल्म सहती आई थी उसे दया आई और वह उस औरत सलमा इसके शोहर फिदा अली, बेटे नजमी और नन्हीं सकीना को अपने घर ले आई। घर क्या था दस बाई दस की एक खोली थी, लेकिन सलमा का खानदान भी मुहल्ले में इतनी ही छोटी खोली में बरसों से रहते आया था। कमला बाई की खोली के एक कोने में धुएं से काली एक दीवार के पास एक बत्ती का चूल्हा पड़ा था जिस पर वह कभी कभार चाय बना लेती थी। दूसरे कोने में रस्सी की एक खटिया थी, जिस पर सिर्फ एक चादर बिछी थी। सलमा का सामान कमला बाई ने एक कोने में रखवा दिया। सबके मुँह हाथ धुलवाएं और चाय और खारी पेश की और दरवाज़े के पास ज़मीन पर बैठकर बोली ''घबराओं मत, ईश्वर सब ठीक कर देगा, जब तक कोई दूसरा बन्दोबस्त नहीं हो जाता, इधर ही रहो, कोई फिक्र मत करों ''इसके बाद इसने कमरे की सफाई की, इधर उधर पड़ी चीजों को समेटा साड़ी के पल्लू से मुँह साफ किया और खटिया पर खड़ी हो गई, ऊपर दीवार पर कमला बाई की, दुर्गा माँ की, सांई बाबा की और हाजी मलंग की तस्वीरें लगी थी, इन्हें उतारा और खटिया के नीचे रखी पेटी में रख दिया और सलमा और फिदा अली से कहा ''लो अब तुम अपने भगवान का फोटो इधर लगा दे तो यह भी तुम्हे अपने घर जैसा लगेगा।''

फिदा अली ने इशारा किया तो नजमी ने अपने सामान से अपने पेश्वा का फोटो फ्रेम निकाला और दीवार पर टांग दिया क्योंकि वह जिस बिरादरी से तालुक रखते थे वहाँ पेश्वा का दर्जा खुदा से कम नहीं था।

फिदा अली की उम्र पच्चास से ऊपर थी और वह एक अच्छे कारीगर थे कमारी पुरा में किसी उसमान भाई बिस्किट वाले के कारखाने में लोहे की डाईयाँ बनाने का काम करते थे। उसमान भाई जो फिदा अली की मेहनत और इमानदारी से खुश थे महिना बारह सौ रूपये तनख़्वाह के अलावा भी फिदा अली को कुछ रकम इनायत करते रहते थे। फिदा अली जानते थे कि उसमान भाई को बिस्किट वाला इसलिए कहते थे, क्योंकि वह सोने के बिस्किट की (तस्करी) स्मगलिंग करते थे और यह कारखाना आमान भाई के असल धंधे पर पर्दा डालने के लिए था लेकिन यह उसमान भाई और खुदा के बीच का मामला था। फिदा अली तो अपनी मेहनत का खाते थे।

नजमी नवीं पास था, लेकिन इसे नौकरी नहीं मिली थी। दर असल वह नौकरी करना भी नही चाहता था। इसका दोस्त आशिक हुसैन गोदी में मुलाज़िम था जो अकसर कुछ विदेशी माल लाकर नजमी को दे देता था, जिसे बेचकर नजमी अपना जेब खर्च पूरा करता था। आशिक हुसैन के बागियाना तेवर उनकी नौकरी की पैदावार थी वरना व्यापारी तो किसी तरह समझौता कर लेने में ही अपनी भलाई समझते हैं। इसी व्यापारिक रिश्ते ने नजमी को आशिक हुसैन का साथ देने पर मजबूर किया था।

खुश रखने की कमला बाई की तमाम कोशिशों के बावजूद सलमा का रोना कम नहीं होता था। वह फिरक़े की चार दीवारी और मुहल्ले की हदों में रहने की आदी थी इसके दो भाई रतलाम में और एक बहन इन्दौर में रहती थी, वालिद नहीं थे लेकिन बूढ़ी और बीमार माँ बड़े भाई के साथ रहती थी, खून के इन रिश्तों से अब वह कभी मिल नहीं पाएगी क्योंकि इसे फ़िरक़े से निकाल दिया गया है। अब इनसे रिश्ता रखा तो उनकी भी यही दुर्गत होगी। मरने के बाद लाशों की बेहुरमती और बच्चों की शादी का खौफ़ हर वक्त सलमा के सिर पर सवार रहता और उसे भविष्य अन्धेरे में डूबा नज़र आता। सलमा को रह रह कर मस्जिद के हंगामें, मजलिसों के शोर शराबे और जमाअत खानों के लजीज़ खाने याद आते लेकिन वह इस जन्नत से निकाली जा चुकी थी। यही ग़म इसे सताता रहता।

कई महीनें गुज़र गए। धीरे–धीरे यह लोग अपने माहौल में रच बस गए थे। सलमा, फिदा अली, नजमी और सकीना अन्दर खोली में सोते और कमला बाई बाहर बरामदे में चारपाई बिछा कर सो जाती। सलमा को कमला बाई की एक आदत बहुत पसन्द थी वह दिन भर की भाग दौड़ के बाद शाम को नहा धो कर साफ सुथरे कपड़े पहनती, बाल संवारती और बालों में मोगरे का गजरा लगाती थी। ज़िन्दगी खुश गवार माहौल में कट रही थी कि एक रोज़ सलमा को फिर एक ज़बरदस्त धक्का लगा। ऐसा धक्का कि इसके पेरों तले की ज़मीन हिल गई, वह इस अचानक के सदमें से दहल गयी। वह बड़ी बेचैनी से अपने शोहर का घर लौटने का इन्तिज़ार करने लगी। आखिर जब बर्दाश्त न हुवा तो नीचे पी.सी.ओ. से फेक्ट्री में फोन कर के फिदा अली को फोरन घर आने को कहां और जैसे ही फिदा अली ने घर में क़दम रखा सलमा ने उनके करीब जाकर दबी ज़ुबान में कहां ''बड़ी गड़बड़ हो गयी है, फोरन कहीं और रहने का इन्तिज़ाम करो'' फिदा अली ने पूछा मगर हुवा क्या है ? इतनी घबराई हुई क्यों हो ? सलमा ने कहा ''यह कमला बाई ठीक नहीं है'' जिस मामूली हैसियत की मराठी औरत ने एक ग़ैर मज़हब के पूरे खानदान को सहारा दिया, और सहारा भी इस वक़्त दिया जब खुद इसकी बिरादरी वालों ने इसे ठुकरा दिया था और वह भी बिना किसी शर्त के और बग़ैर किसी जान पहचान के सिर्फ और सिर्फ इन्सानियत के नाते वह कमला बाई ठीक नहीं है, यह कैसे हो सकता है। फिदा अली यह बात मानने को तैयार नहीं थे। उन्होंने सलमा से पूछा।

''ठीक नहीं है, क्या मतलब है तुम्हारा ?क्या कर दिया इस ग़रीब औरत ने ?

तब सलमा ने दबी जुबान में कहां ''वह पड़ौस में ज़ेतून बहन है न , मुकादिम साहब की बीवी, वह बता रही थी कि कमला बाई वैश्या हैं, धन्धा करती है।''

यह सुनते ही फिदा अली सर पकड़ कर खटिया पर बैठ गए ''या मौला, यह क्या सुन रहा हूँ'' वह बहुत देर तक सोचते रहे, बीते वाकियात पर ग़ौर करते रहे फिर बोले ''यक़ीन तो नहीं आता पर हो भी सकता है, क्योंकि कभी कभी रात में बाथरूम जाने के लिए उठा तो देखा कि कमला बाई बरामदे में नहीं थी सोचा कहीं गई होगी '' सलमा ने यक़ीन दिलाने के लिए कहां'' आपको पता नहीं वह रोज़ शाम को नहा धो कर साफ सुथरे कपड़े पहनती, खुश्बू लगाती, गजरा सजाती और अब समझ में आ रहा है कि वह बनती संवरती क्यों थी, यह सब नाटक किस के लिए था। तौबा–तौबा यह कहां फंस गए। यहॉ से फोरन निकल जाना चाहिये वरना बड़ी बदनामी होगी।''

शेष भाग अगले अंक मे

Letter to the Editor

Dear Editor,
Congratulations to the editorial team for its par excellence efforts.

I have a suggestion to print Bismillah hir Rahman nir Raheem on top of the first page.

Secondly, it would be useful if you can collect and compile email addresses of all members of the Dawoodi Bohra Youth jamaat. This would also serve as an important record for us. Moreover, you can email Bohra Journal PDF to those email addresses.

- Mubarak Hussain, Dubai

Thank you for the words of appreciation. We have noted the suggestions made by you and would try to implement them if possible.

- Editor

All Letters to the Editor should have sender's name. We shall not publish names if requested. But annonymous letters will not be published.

Editorial Board :
Editor : Razia Sanwari; Editorial Assistants: Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji
Published by : Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur
Tel: 91-294-2521719; Fax: 91-294-2524886; email: journal@dawoodi-bohras.com
Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur - 313001 Ph. : 91-294-2523830

POSTAL ADDRESS

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit http://dawoodi-bohras.com/

Disclaimer : The views published in this publication are solely the contributors'. The Editor and editorial board holds no responsibilities for it.